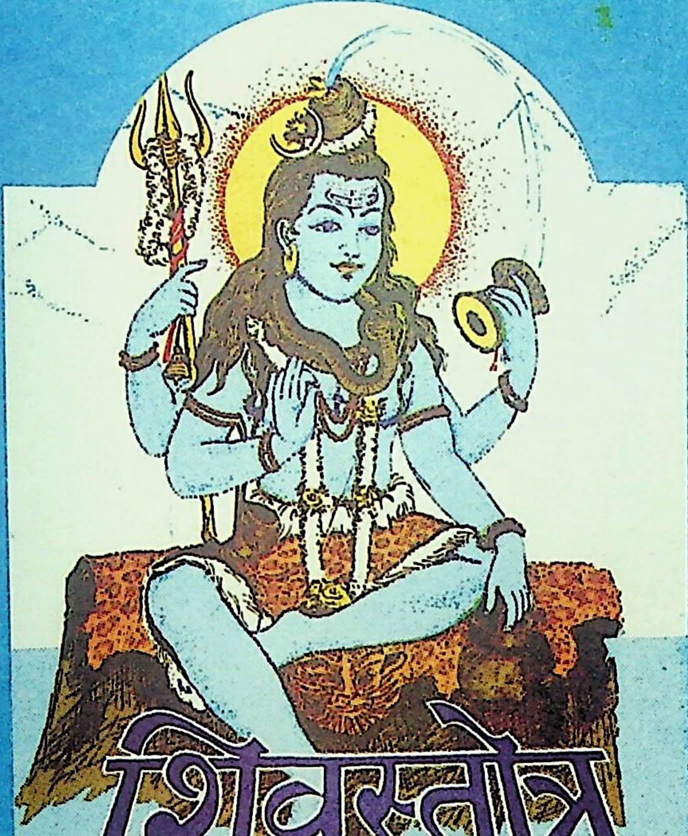

शिवस्तोत्र

श्रीः

उपमन्युकृत-

शिवस्तोत्रम्

आगरानिवासी पं–रामेश्वरभट्टजी के शिष्य

लक्ष्मीनारायण कृत हिन्दी टीका सहित

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जून २००८, सम्वत् २०६५

मूल्य ५ रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

भूमिका

शंकरभक्तगण !

यह जगद्विख्यात शिवस्त्रोत्र आपके लिये तयार है; इसके पाठ करनेमें जो हृदयसागरमें आनंदकी तरंगे उठती हैं उनसे भक्तगण शिवजीकी भक्तिमें लवलीन हो जाते हैं और हृदयमें ऐसा अनुभव होता है मानो साक्षात् शिवजीके दर्शन हो रहे हैं। मुझे इस स्तोत्रका पाठ करते २ कई वर्ष हो गये अब मेरे चित्तमें यह उत्कंठा हुई कि इसका अर्थ शिवभक्तोंकी प्रसन्नताके लिये छपवाऊं परंतु इस कामकी अपनेमें पूरी योग्यता न समझकर आगरा निवासी पं० रामेश्वरभट्टजीकी शरण ली और उनकी कृपासे मैंने इस हिन्दीटीकाको समाप्त करी और उनकीही आज्ञासेकल्याण-मुंबई निवासी परम धार्मिक सेठजी गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीके करकमलमें समर्पित करता हूं कि वे इसे छापकर सुन्दर यश फल और धन्यवादके भागी बनें और भगवान भूतभावन शंकर उनपर दया करें यही मेरा मनोरथ है.

आ. शु. १५ भौमवार.
सं. १९५५.

शंकरचरणकमलमधुकर—
शिष्य लक्ष्मीनारायण
राजाकी मंडी,
आगरा.

श्रीशिवाय नमः

अथ

अन्वयहिन्दीटीकासहितं

उपमन्युकृताशिवस्तोत्रम्

जय शङ्कर पार्वतीपते मृड शम्भो शशिखण्डमण्डन ।।
मदनान्तक भक्तवत्सल प्रिय कैलास दयासुधाम्बुधे ।।१।।

अन्वयः–हे शंकर ! हे पार्वतीपते ! हे मृड ! हे शम्भो ! हे शशिखण्डमण्डन ! हे मदनांतक ! हे भक्तवत्सल ! हे प्रिय-कैलास ! हे दयासुधाम्बुधे ! जय ।।१।।

अर्थः–हे कल्याण करनेवाले ! हे पार्वतीजीके स्वामी ! हे संतोष देनेवाले ! हे शम्भु ! हे चंद्रमाको धारण करनेवाले ! हे कामदेवके नाशक ! हे भक्तोंपर करुणा करनेवाले ! हे कैलासको प्यार करनेवाले ! हे दयारूपी अमृतके समुद्र ! तुम्हारी जय होय ।।१।।

सदुपायकथास्वपण्डितो हृदये दुःखशरेण खण्डितः ।।
शशिखण्डशिखण्डमण्डनं शरणं यामि शरण्यमीश्वरम् ।।२।।

अन्वयः–सदुपायकथासु अपण्डितः हृदये दुःखशरेण खण्डितः (अहं) शशिखण्डशिखण्डमण्डनं शरण्यम् ईश्वरं शरणं यामि ।।२।।

अर्थः– अच्छे उपायोंकी जो कथा है उसमें मूर्ख अर्थात् कुछ अच्छे २ उपाय नहीं जानता और हृदयमें दुःखरूपी बाणसे पीडित ऐसा मैं चंद्रमाके खण्डका आभूषण धारण करनेवाले और शरण देनेवाले महादेवजीकी शरणमें प्राप्त होता हूं ।।२।।

महतः परितः प्रसर्प्पतस्तमसो दर्शनभेदिनो भिदे ।।
दिननाथ इव स्वतेजसा हृदयव्योम्नि मनागुदेहि नः ।।३।।

अन्वयः–परितः प्रसर्प्पतः दर्शनभेदिनः महतः तमसः भिदे दिननाथ इव स्वतेजा न : हृदयव्योम्नि मनाक् उदेहि ।।३।।

अर्थ :–चारों ओर फैला हुआ और दर्शनको रोकनेवाला ऐसा जो बड़ा भारी अंधेरा है उसके नाश करनेके लिये सूर्य्यके समान अपने तेजसे मेरे हृदयरूपी आकाशमें शीघ्र उदय होउ ।।३।।

न वयं तव चर्म्मचक्षुषा पदवीमप्यभिवीक्षितुं क्षमाः ।।
कृपयाऽभयदेन चक्षुषा सकलेनेश विलोकयाशु नः ।।४।।

अन्वयः–वयं चर्मचक्षुषा तव पदवीम् अपि अभिबीक्षितुं क्षमाः न। हे ईश ! कृपया सकलेन अभयदेन चक्षुषा नः आशु विलोकय ।।४।।

अर्थः–हम चर्मके नेत्रसे तुम्हारी जो पदवी है उसेभी देखनेको योग्य नहीं हैं इस लिये हे शंकर ! कृपा करके संपूर्ण अभयके देनेवाले अपने नेत्रसे हमें शीघ्र देखो ।।४।।

त्वदनुस्मृतिरेव पावनी स्तुतियुक्ता यदि सा पुनस्तु किम् ।।
मधुरं हि पयः स्वभावतो ननु कीदृक् सितशर्करान्वितम् ।।५।।

अन्वयः—त्वदनुस्मृतिः एव पावनी यदि स्तुतियुक्ता तु पुनः किं पयः स्वभावतः मधुरं हि सितशर्करान्वितं ननु कीदृक् ।।५।।

अर्थः—तुम्हारा स्मरणही पवित्र है और जो स्तुति करके युक्त हो तो फिर क्या कहना है दुग्ध स्वभावहीसे मधुर है और जो श्वेतशर्करायुक्त होय तो कहो कैसा अर्थात् बहुत उत्तम है ।।५।।

बहवो भवतानुकम्पिता किमितीशान न मानुमन्यसे ।।
दधता किमु मन्दराचलं परमाणुः कमठेन दुर्धरः ।।६।।

अन्वयः—हे ईशान ! भवता बहवः अनुकम्पिताः किमिति मा न अनुमन्यसे मंदराचलं दधता कमठेन परमाणुः दुर्धरः किमु ।।६।।

अर्थः—हे शंकर ! आपने बहुतेरोंके ऊपर कृपा करी है यह क्या बात है कि मेरे ऊपर कृपा नहीं करते मंदराचलको धारण करनेवाले कछुएको परमाणुका धारण करना क्या कुछ कठिन है अर्थात् कुछ नहीं है ।।६।।

अशुचिं यदि मानुमन्यसे किमिदं मूर्ध्नि कपालदाम ते ।।
अथ साधमसाधुसंगमं विषलक्ष्मासि न किं द्विजिह्वभृत् ।।७।।

अन्वयः–यदि मा अशुचिं अनुमन्यसे ते मूर्ध्नि इदं कपालदाम अथ असाधुसंगमं साघम् (त्वं) विषलक्ष्मा द्विजिह्वभृत् किं न असि ॥७॥

अर्थः–जो तुम मुझे अपवित्र मानते हो तो तुम्हारे गलेमें भी मुण्डोंकी माला पड़ी है और जो असाधुके संग करनेमें पाप है तो क्या तुम्हारे विषका चिह्न नहीं है और तुम सर्पोंको धारण नहीं करते ॥७॥

सविषोऽप्यमृतायते भवान् शवमुण्डाभरणोऽपिपावनः ॥
भव एव भवान्तकः सतां समदृष्टिर्विषमेक्षणोऽपि सन् ॥८॥

अन्वयः– भवान् सविषः अपि अमृतायते शवमुण्डाभरणः अपि पावनः भवांत[१]कः (किंतु) सतां भव एव विषमेक्षणः अपि सन् समदृष्टिः ॥८॥

अर्थः–तुम विष करके युक्त हो तो परंतु अमृतके समान आनंद-दायक हो और मुर्दोंके मुंडोंका आभरण तो पहरते हो किंतु पवित्र हो तुम संसारके नाशक हो तो किंतु सज्जनोंको मंगलदायक हो तुम विषम दृष्टि हो तो अर्थात् तुम्हारे तीन नेत्र तो हैं किंतु समदृष्टि हो अर्थात् सबको समान देखते हो ॥८॥

---

१ भवान् भवः अपि सतां भवांतक एव-इति तृतीय पादस्य योजना मुद्रणालयाधिकृतशास्त्रिसंमता ।

अपि शूलधरो निरामयो दृढवैराग्यरतिश्चरागवान् ।।
ननु भैक्ष्यचरो महेश्वरश्चरितं चित्रमिदं हि ते प्रभो ।।९।।

अन्वयः—शूलधरः अपि निरामयः रागवान् (अपि) दृढ-वैराग्यरतिः भैक्ष्यचरः (अपि) महेश्वरः हे प्रभो ! ते इदंचरित्रं चित्रं ननु ।।९।।

अर्थः—शूलको धारण तो करते हो परंतु रोगरहित हो तुम संसारके सुखोसे युक्त हो तो परंतु पक्के वैराग्यमें तुम्हारी प्रीति है भिक्षुक तो हो किंतु महेश्वर हो इसलिये हे प्रभो ! तुम्हारा यह चरित्र सचमुच बड़ा विचित्र है ।।९।।

वितरत्यभिवाञ्छितं दृशा परिदृष्टः किल कल्पपादपः ।।
हृदये स्मृत एव धीमते नमतेऽभीष्टफलप्रदो भवान् ।।१०।।

अन्वयः—दृशा परिदृष्टः कल्पपादपः अभिवाञ्छितं वितरति किल भवान् हृदये स्मृत एव नमते धीमते अभीष्टफलप्रदः ।।१०।।

अर्थः—[1]आपकी दृष्टिसे देखा गया कल्पवृक्ष निश्चय करके मनोवाञ्छित फल देता है और तुम तो हृदयमें स्मरण करतेही

---

१ यह शब्द अनन्वित है ।

विनय करते हुए बुद्धिमान्को अर्थात् भक्तजनको अभीष्ट फल देते हो ।।१०।।

सहसैव भुजङ्गपाशवानवगृह्णाति न यावदन्तकः ।।
अभयं कुरु तावदाशु मे गतजीवस्य पुनः किमौषधैः ।।११।।

अन्वयः—भुजङ्गपाशवान् अन्तकः यावत् सहसा एव न अवगृह्णाति तावत् मे आशु अभयं कुरु गतजीवस्य पुनः औषधैः किम् ।।११।।

अर्थः— सर्पका पाशलिये यमराज जबतक मुझे एकाएकी न ग्रहण करने पाये तबतक आप मुझे भयरहित करो क्योंकि जब जिस पुरुषके प्राण चले गये तब उस पुरुषको औषधियोंसे क्या होता है ।।११।।

सविषैरिव भीमपन्नगैर्विषयैरेभिरलं परिक्षतम् ।।
अमृतैरिव सम्भ्रमेण मामभिषिञ्चाशु दयावलोकनैः ।।१२।।

अन्वयः— सविषैः भीमपन्नगैः इव एभिः विषयैः अलं परिक्षतं मां सम्भ्रमेण अमृतैः इव दयावलोकनैः आशु अभिषिञ्च ।।१२।।

अर्थः—विषकरके युक्त भयंकर सर्पोंके समान इन सांसारिक विषयों करके मुझ डसे हुएको वेगसे अमृतके समान अपनी दयादृष्टिसे शीघ्र शीतल करो ।।१२।।

बहवो मुनयोप्यदीनतां गमिताः स्वाभिमतार्थलाभतः ।।
करुणाकर येन तेन मामवसन्नं ननु पश्य चक्षुषा ।।१३।।

अन्वयः—हे करुणाकर ! येन बहवः मुनयः अपि स्वाभिमतार्थ-लाभतः अदीनतां गमिताः ननु तेन चक्षुषा अवसन्नं मां पश्य ।।१३।।

अर्थः—हे करुणानिधान ! जिस आपकी दृष्टिके द्वारा बहुतसे मुनि भी अपने मनोरथ के लाभसे प्रसन्नताको पहुंचाये गये उस नेत्रसे मुझ दुःखीको अवश्य देखिये ।।१३।।

प्रणमाम्यथ यामि वापरं शरणं कं कृपयाभयप्रदम् ।।
विरहीव विभो प्रियामयं परिपश्यामि भवन्मयं जगत् ।।१४।।

अन्वयः—अथ कृपया अभयप्रदं अपरं कं प्रणमामि वा शरणं यामि। हे विभो ! विरही इव जगत् प्रियामयं भवन्मयं परि-पश्यामि ।।१४।।

अर्थः—और कृपासे अभयके देनेवाले ऐसे किस दूसरेको मैं नमस्कार करूं अथवा शरण जाऊं हे प्रभो ! विरहीके समान सब जगत्को प्रियामय और आपमय देखता हूं ।।१४।।

विलुठाम्यवनौ किमाकुलं किमुरो हन्मि शिरश्छिनद्मि वा ।।
किमु रोदिमि रारटीमि किं कृपणं मां न यदीक्षसे प्रभो ।।१५।।

अन्वयः—हे प्रभो ! यदि मां कृपणं न ईक्षसे तदा अवनौ आकुलं विलुठामि किं ? उरः न हन्मि वा शिरः न छिनद्मि किमु न रोदिमि किं न रारटीमि ।।१५।।

अर्थः—हे प्रभो ! जो मुझ दीनको आप नहीं देखोगे तो क्या मैं पृथ्वीपर व्याकुल होकर नहीं लोटूंगा, अर्थात् लोटूंगा ही और क्या छाती नहीं पीटूंगा, वा शिर नहीं काटूंगा और क्या नहीं रोऊंगा अथवा क्या रटना नहीं करूंगा; अर्थात् जो न देखोगे तो सबही करूंगा ।।१५।।

क्व दृशं विदधामि किं करोम्यथ तिष्ठामि कथं भयाकुलः ।।
क्व नु तिष्ठसि रक्ष रक्षमां शिव शम्भो शरणागतोऽस्मि ते ।।१६।।

अन्वयः– हे शिव ! दृशं क्व विदधामि किं करोमि अथ भयाकुलः कथं तिष्ठामि। हे शंभो ! क्व नु तिष्ठसि मां रक्ष रक्ष (अहं) ते शरणागतः अस्मि ॥१६॥

अर्थः–हे शंकर! मैं अपनी दृष्टि कैसे धारण करूं और क्या करूं और भयसे व्याकुल होता हुआ कहां बैठूं तुम कहां बैठे हो मेरी रक्षा करो रक्षा करो मैं तुम्हारे शरणागत हूं ॥१६॥

शिव सर्वद शर्व सर्वग मयि देव प्रणते दयां कुरु ॥
नम ईश्वर नाथ दिक्पते पुनरेवेश नमो नमोऽस्तु ते ॥१७॥

अन्वयः–हे शिव ! हे सर्वद ! हे शर्व ! हे सर्वग ! हे देव ! हे ईश्वर ! हे नाथ ! हे दिक्पते ! प्रणते मयि दयां कुरु। हे ईश ! पुनः एव ते नमो नमः अस्तु ॥१७॥

अर्थः–हे शिव ! हे संपूर्ण संपत्तिके देनेवाले ! हे कल्याण करनेवाले ! हे सर्वव्यापी ! हे ईश्वर ! हे स्वामी ! हे दिशाओंके पति ! मैं आपका भक्त हूं मुझपर दया करो तुमको नमस्कार है और फिर भी तुमको वारंवार नमस्कार है ॥१७॥

शरणं तरुणेंदुशेखरः शरणं मे गिरिराजकन्यका ।।
शरणं पुनरेव तावुभौ शरणं नान्यदुपैमि दैवतम् ।।१८।।

अन्वयः–तरुणेंदुशेखरः मे शरणं गिरिराजकन्यका मे शरणं पुनः तौ उभौ एव शरणम् अन्यत् दैवतं शरणं न उपैमि ।।१८।।

अर्थः–तरुणः अर्थात् द्वितीयाके चंद्रमाको धारण करनेवाल शिवजीकी शरण हूं और हिमाचलकी कन्या जो पार्वतीजी हैं उनकी शरण हूं और फिर मैं उन दोनों शिवपार्वतीकी शरण हूं और दूसरे देवताकी शरण नहीं पाता हूं ।।१८।।

उपमन्युकृतं स्तवोत्तमं पठितुः शम्भुसमीपवर्त्तिनः ।।
अभिवाञ्छितभाग्यसम्पदः परमोक्षं प्रददाति शङ्करः ।।१९।।

अन्वयः–शंकरः शम्भुसमीपवर्तिनः उपमन्युकृतं स्तवोत्तमं पठितुः अभिवाञ्छितभाग्यसंपदः परमोक्षं च प्रददाति ।।१९।।

अर्थः–उपमन्युके रचे हुए उत्तम स्तवको जो कोई महादेवजीके पास बैठकर पढ़ता है उसको महादेवजी मनोवाञ्छित धन और संपत्ति और परमोक्ष देते हैं ।।१९।।

शङ्करस्य चरितं रसामृतं चन्द्रशेखरगुणानुकीर्त्तनम् ।
नीलकण्ठपदपद्मसेवनं बोभवीतु मम जन्मजन्मनि ॥२०॥

अन्वयः—शंकरस्य रसामृतं चरितं चंद्रशेखरगुणानुकीर्तनं नीलकंठपदपद्मसेवनं मम जन्मजन्मनि बोभवीतु ॥२०॥

अर्थः—शंकरका रसोंमें अमृतके समान चरित्र और शंकरके गुणोंका कीर्त्तन और नीलकंठ महादेवजीके चरणकमलोंका सेवन मुझे जन्मजन्ममें विशेष करके प्राप्त होय २० इति पण्डित रामेश्वरभट्टजीके शिष्य लक्ष्मीनारायणकी रची हुई उपमन्युकृतशिवस्तोत्रकी हिन्दीटीका समाप्त ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS